क्रियावादी-आदि ३६३ पाखण्डी-स्वरूप स्तोत्र

सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय

नव गाथाना प्राकृतभाषामय आ नानकडा स्तोत्रमां भगवंतने विज्ञप्ति करवाना मिषे, महावीर प्रभुना समवसरणमां आवता ३६३ पाखंडिओनुं स्वरूप तथा गणना दर्शावी छे ।

३६३ पाखंडिओमां क्रियावादी-१८० अक्रियावादी-८४ अज्ञानवादी-६७ अने विनयवादी-३२ छे ।

क्रियावादीना १८० भेदोनी गणना आ प्रमाणे दर्शावी छे-

जीव स्वतः परतः एम बे प्रकारथी छे (२), ते पण नित्य तथा अनित्य छे (२x२=४), ते पण काल-नियति-स्वभाव-ईश्वर तथा आत्मा एम पांच कारणथी छे (४x५=२०) । आ रीते नव तत्त्वने गणवाथी (९x२०=१८०) १८० भेद क्रियावादीना थाय छे ।

अक्रियावादीना ८४ भेद आ प्रमाणे छे -

जीव स्वतः परतः एम बे प्रकारथी नथी (२), ते पण काल-यदृच्छा-नियति-स्वभाव-ईश्वर-आत्मारूप छ कारणथी नथी (२x६=१२) । आ रीते पुण्य-पाप सिवायना सात तत्त्वने गणवाथी (७x१२=८४) ८४ भेद अक्रियावादीना थाय छे ।

अज्ञानवादीना ६७ भेद आ प्रमाणे छे -

सत्-असत्-सदसत्-अवक्तव्य-सदवक्तव्य-असदवक्तव्य-सदसदवक्तव्यरूप सात भांगामां नव तत्त्वने गणवाथी (९x७=६३) भेद थाय । तेमां सदुत्पत्ति-असदुत्पत्ति-सदसदुत्पत्ति-अवक्तव्यउत्पत्ति ए ४ भेद उमेरवाथी (६३+४=६७) ६७ भेद अज्ञानवादीना थाय छे ।

विनयवादीना ३२ भेद आ प्रमाणे छे -

देव-नृप-यति-ज्ञाति-स्थविर-बालक-पिता-माता आ आठनो मन-वचन-काया तथा दान रूप चार भेदे विनय करवाथी (८x४=३२) ३२ भेद विनयवादीना थाय छे ।

आ रीते गणना दर्शावी कर्ता स्तोत्रना अंते विनंति करे छे के-"हे स्वामिन् ! आप एवुं करो के जेथी हवे पछी मने आ पाखंडिओ बाधा न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहोंचाडे ।"

स्तोत्रनी शरुआतमां **सिरिवज्जसेणपणयं** ए पद छे । ते उपरथी एवुं अनुमान थई शके छे के आ स्तोत्रनी रचना कोई वज्रसेनमुनिना शिष्य मुनिए करी हशे । अलबत्त, जैन परंपरामां वज्रस्वामिना शिष्य वज्रसेनमुनि प्रसिद्ध छे ते नोंधवा लायक छे ।

आ स्तोत्रनो रचना संवत् जणायो नथी ।

क्रियावादि-आदि ३६३ पाखण्डस्वरूप स्तोत्र

सिरिवज्जसेणपणयं तणयं सिद्धत्थ-तिसलदेवीणं ।
पाखंडतिमिरनासण-सूरं वीरं नमंसामि ॥१॥

सामी ! तुह मयरहिओ भोलविओ हं कुमग्गरूवेहिं ।
पाखंडविसेसेहिं तिसयतिसट्ठेहि ते य इमे ॥२॥

असीयसयं किरियाणं अकिरियवाई होइ चुलसीइ ।
अन्नाणीण सत्त(त)ट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसा ॥३॥

अत्थि जिओ सो परओ निच्चे-अणिच्चो य कालओ निअओ ।
ससहावेसर-आया नव-पयगुण असीयसओ किरिया ॥४॥

नत्थि जी(जि)ओ सो परओ काले-जइच्छा-नीअ सहावओ ।
ईसरे-आया सगतत्तसंगुणा किरिय चुलसीई ॥५॥

सयं-असेयो-भय-वत्तव्य-सयवत्तव्वो य असयवत्तव्वो ।
तदुभयवत्तव्वजी(जि)ओ नवपयगुणिया य तेवट्ठी ॥६॥

सयभाव-असेयभावा तदुभय-अवत्तव्वभाव-उप्पत्ती ।
इय चउजुअ सत्तठी भेया अन्नाणवाईणं ॥७॥

मण-वयण-कायदाणे सुर-निव-जइ-नाइ-थेर-अवमेसु ।
पिय-माइसु अट्ठ चउगुण बत्तीस विणयवाईणं ॥८॥

इय तिसय-तेवट्ठा पाखंडा च(य) जं कुग्गहगहीया ।
तं कुण जह मं सामी पुणो वि बाहंति नो एए ॥९॥

॥ इति श्रीस्तवनसम्पूर्णम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org